पाठ्यक्रम

सामाजिक विज्ञान (Social Studies)

उद्देश्य

पाठ्यक्रम का लक्षण है कि–

- हमारी पिछली पीढ़ियों के अनुभवों एवं संघर्षों से समुचित शिक्षा ली जाए;
- देश के संसाधनों का विवेकपूर्ण प्रयोग तथा उन्हें सुरक्षित रखा जाए;
- इस तथ्य को स्थापित करना कि भारत में कार्यरत लोकतन्त्र हमारे संविधान में वर्णित मूल्यों द्वारा प्रेरित है; समकालीन जानकारी एकत्रित कर इन समस्याओं के समाधान में प्रत्येक नागरिक के योगदान की पहचान की जाए।

मूल्यांकन

निर्माणात्मक और सारांशात्मक दोनों ही प्रकार के मूल्यांकन का प्रयोग किया जाना आवश्यक है। निर्माणात्मक अर्थात् समय-समय पर होने वाला मूल्यांकन टीएमए के रूप में किया जाएगा और पाठ्यक्रम के अन्त में बाह्य परीक्षा जो वर्ष में दो बार अर्थात् मार्च एवं अक्टूबर में 100 अंकों के पेपर के दो रूप में होगा। इन दो के अतिरिक्त स्वयं मूल्यांकन पाठगत प्रश्नों, पाठात प्रश्नों तथा विभिन्न गतिविधियाँ भी प्रत्येक अध्याय का अभिन्न हिस्सा होंगे।

पाठ्यक्रम वर्णन

मॉड्यूल 1 : भारत तथा विश्व विभिन्न युगों में

उपागम—इस मॉड्यूल का लक्ष्य शिक्षार्थियों को विभिन्न युगों में भारत तथा विश्व के निर्माण व विकास से परिचित कराना है। नीचे दी गई घंटनाएँ तथा परिक्रियाएँ नई राजनीतिक तथा आर्थिक शक्तियों का प्रतिनिधित्व करती हैं यद्यपि वे एक-दूसरे से पूर्णत: भिन्न हैं। एक ओर जहाँ फ्रांस की क्रान्ति ने उदारवाद तथा लोकतन्त्र को प्रोत्साहित किया, दूसरी ओर रूस की क्रान्ति ने समाजवादी विचारों को सृजित तथा कार्यान्वित किया, जर्मनी में नाजीवाद ने लोकतन्त्र तथा समाजवाद दोनों को ही नकार दिया। उस अध्ययन का उद्देश्य छात्र तथा छात्राओं को भारत पर उपनिवेशवाद के प्रभाव के साथ-साथ समाज सुधार तथा ब्रिटिश शासन के विरुद्ध प्रतिरोध एवं भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन के उद्भव विकास से पूर्णरूपेण परिचित कराना है। यह दिखलाता है कि किस प्रकार लोकप्रिय प्रभुसत्ता तथा समान नागरिकता की धारणा, स्वतन्त्रता संघर्ष द्वारा विकसित की गई थीं। राष्ट्रीय संघर्ष में भाग लेने वाले नेताओं एवं सहभागियों द्वारा भारत के भविष्य सम्बन्धी दृष्टिकोणों से भी भलीभाँति परिचित कराना है। पाठों की विषय वस्तु का प्रस्तुतिकरण उपर्युक्त उदाहरणों, गतिविधियों सर्वेक्षणों, स्थिति अध्ययन (केस स्टडी) इत्यादि के माध्यम से जीवन कौशलों जैसे चिन्तन, सम्वाद और बातों के विकास पर विशेष ध्यान देगा।

सामाजिक विज्ञान की प्रस्तावना–

1. प्राचीन विश्व
2. मध्यकालीन विश्व
3. आधुनिक विश्व - I
4. आधुनिक विश्व - II
5. भारत पर ब्रिटिश शासन का प्रभाव : आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक (1757-1857)
6. औपनिवेशिक भारत में धार्मिक एवं सामाजिक जागृति
7. ब्रिटिश शासन के विरुद्ध लोकप्रिय जन प्रतिरोध
8. भारत का राष्ट्रीय आन्दोलन

मॉड्यूल II : भारत–प्राकृतिक पर्यावरण संसाधन तथा विकास–

उपागम—इस मॉड्यूल की रूपरेखा, शिक्षार्थियों को प्राकृतिक वातावरण, संसाधनों एवं विकास के पारस्परिक सम्बन्धों से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार की गई। यह मॉड्यूल शिक्षार्थियों को पर्यावरण तथा इसके मौलिक तत्वों एवं इसकी प्रगतिशीलता को समझने के योग्य बनाने का प्रयास करता है। यही नहीं, यह पर्यावरणीय विज्ञान के सन्तुलन को निर्धारित एवं प्रकाशित करता है ताकि सम्पूर्ण जीवन जिसका मानव एक इकाई मात्र है वह पृथ्वी पर न केवल अपना अस्तित्व बनाए रखें अपितु समृद्ध भी हो।

Scanned by CamScanner

इस मॉड्यूल की रूपरेखा शिक्षार्थियों को प्राकृतिक संसाधन आधार तथा सतत् पोषीय वैज्ञानिक विकास की अवधारणा से परिचित कराती है। यह मुख्यतया, अनेक प्राकृतिक तथा मानवकृत संसाधनों के वितरण, उपयोग तथा प्राकृतिक वातावरण के संरक्षण एवं संचालन की आवश्यकता को उजागर करता है। इस मॉड्यूल का विकास भारत के सन्दर्भ में शिक्षार्थियों को देश की भौतिक और सांस्कृतिक विभिन्नताओं तथा उसमें निहित एकता को समझाने के लिए किया गया है। भौतिक विभिन्नताओं में स्थल आकृतियाँ, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति तथा वन्य जीवन आदि सम्मिलित हैं। सांस्कृतिक पहलुओं में भारत के सन्दर्भ में संस्कृति का अर्थ, सांस्कृतिक विभिन्नताएँ और भौतिक वातावरण से इसके सम्बन्ध सन्निहित हैं। इसमें देश की बहुत प्राकृतिक तथा सांस्कृतिक विरासत व परम्परा जिसे भविष्य की आवश्यकताओं के लिए सुरक्षित रखना है, पर विशेष एवं महत्वपूर्ण बल दिया गया है। इस नई पाठ्यसामग्री का प्रस्तुतिकरण व विकास उपयुक्त उदाहरणों, गतिविधियों, सर्वेक्षणों, केस स्टडी इत्यादि के माध्यम से किया गया है ताकि शिक्षार्थियों में चिन्तन, सम्वाद और वार्ता जैसे जीवन कौशलों का विकास किया जा सके।

1. भारत का भौतिक भूगोल
2. जलवायु
3. जैव विविधता
4. भारत में कृषि
5. यातायात तथा संचार के साधन
6. जनसंख्या हमारा प्रमुख संसाधन

मॉड्यूल III : लोकतन्त्र की कार्यप्रणाली–

उपागम–इस मॉड्यूल की रूपरेखा के अन्तर्गत एक अच्छे नागरिक, उसके अधिकारों एवं कर्त्तव्यों तथा राज्य और नागरिकों के पारस्परिक सम्बन्धों की विषयवस्तु को समाहित किया गया है। यह कल्याणकारी राज्य की संरचना और कार्यप्रणाली को उजागर करता है तथा इसके साथ ही शिक्षार्थियों को सरकार के निम्नतर से लेकर उच्चतम तक के विभिन्न स्तरों से परिचित कराने का प्रयास करता है। स्थानीय स्तर पर तीन संस्थाओं का वर्णन किया गया है-पंचायत राज, नगरीय तथा जिला प्रशासन। इसके पश्चात दो अन्य स्तर सरकारी राज्य तथा केन्द्र सरकार की विस्तृत व्याख्या की गई है। पाठों की विषय-वस्तु का प्रस्तुतिकरण उपयुक्त उदाहरणों, गतिविधियों के माध्यम से जीवन कौशलों, जैसे-चिन्तन, सम्वाद तथा वार्ता समस्या समाधान के विकास को विशेष महत्व देते हुए किया गया है।

1. संवैधानिक मूल्य तथा भारत की राजनीतिक व्यवस्था
2. मौलिक अधिकार तथा मौलिक कर्त्तव्य
3. भारत एक कल्याणकारी राज्य
4. स्थानीय शासन तथा क्षेत्रीय प्रशासन
5. राज्य स्तर पर शासन
6. केन्द्रीय स्तर पर शासन
7. राजनीतिक दल तथा दबाव समूह
8. जनता की सहभागिता तथा लोकतान्त्रिक प्रक्रिया

मॉड्यूल IV : समसामयिक भारत–मुद्दे एवं चुनौतियाँ–

यह मॉड्यूल देश के भीतर तथा बाहर राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों की पहचान कराने का प्रयास करता है। शिक्षार्थियों को राष्ट्र के समक्ष व्याप्त समस्याओं से अवगत कराना, आवश्यक ही नहीं अपितु अनिवार्य हैं। पाठों की विषयवस्तु का प्रस्तुतिकरण उपयुक्त उदाहरणों, गतिविधियों, सर्वेक्षणों, केस स्टडी इत्यादि के माध्यम से विविध जीवन कौशलों जैसे सहनशीलता, समस्या समाधान, चिन्तन वार्ता आदि को विशेष रूप से ध्यान में रखकर किया गया है।

1. भारतीय लोकतन्त्र के समक्ष चुनौतियाँ
2. राष्ट्रीय एकीकरण तथा पंथनिरपेक्षता
3. सामाजिक आर्थिक विकास तथा अभावग्रस्त समूहों का सशक्तीकरण
4. पर्यावरणीय क्षरण तथा आपदा प्रबन्धन
5. शान्ति और सुरक्षा

पाठ्यक्रम ढाँचा

मॉड्यूल नं.	मॉड्यूल का नाम	अंक/मूल्य	अध्ययन के घण्टे
मॉड्यूल I	भारत तथा विश्व विभिन्न युगों में	32 अंक	76 घण्टे
मॉड्यूल II	भारत-प्राकृतिक पर्यावरण संसाधन तथा विकास	27 अंक	64 घण्टे
मॉड्यूल III	लोकतन्त्र की कार्यप्रणाली	28 अंक	68 घण्टे
मॉड्यूल IV	समसामयिक भारत : मुद्दे एवं चुनौतियाँ	13 अंक	32 घण्टे
	कुल जोड़	**100 अंक**	**240 घण्टे**

Scanned by CamScanner